शेख़ फ़रीद – सबद ४७

कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरु लोहारु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८०

कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरु लोहारु ॥
फरीदा हउ लोड़ी सहु आपणा तू लोड़हि अंगिआर ॥४३॥

सार: हम प्रायः जीवन के साधनों को उद्देश्य समझ भ्रमित हो जाते हैं और इस प्रक्रिया में उनके अर्थ से अपने वास्तविक स्वरूप को ढक लेते हैं। हम अक्सर पद, उत्पादकता और रिश्तों को ही पूर्णता मान लेते हैं, यह भूल जाते हैं कि यह केवल उस तक पहुँचने के रास्ते हैं। यद्यपि यह स्थिरता प्रदान कर सकते हैं पर आत्मिक पूर्णता का स्थान नहीं ले सकते। जब हम बाहरी साधनों को अपने अस्तित्व की परिभाषा बनाने के बजाय उन्हें केवल आंतरिक स्वरूप का सहारा बनने देते हैं, तब पूर्णता प्राप्त होती है। यह बदलाव जीवन को केवल संचालन से बदलकर वास्तविकता की ओर एक सार्थक यात्रा में बदल देता है।

कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरु लोहारु ॥
कंधे पर कुल्हाड़ी और सिर पर घड़ा लिए, लोहार लकड़ी इकट्ठा करने के लिए जंगल में जाता है। यह दृश्य उन बिना सोचे-समझे अपनाई गई दिनचर्याओं के बोझ को दर्शाता है जिन्हें हम अक्सर अपने दैनिक जीवन का हिस्सा मानकर स्वीकार कर लेते हैं।

फरीदा हउ लोड़ी सहु आपणा तू लोड़हि अंगिआर ॥४३॥
फ़रीद कहते हैं, मैं अपने सच्चे साथी, उस सर्वव्यापी चेतना की तलाश में हूँ जबकि तुम केवल अंगारों की चाह रखते हो। यह शांति देने वाली ज्ञान की खोज और बेचैनी देने वाली क्षणिक सुखों की भ्रामक लालसा के बीच के विरोधाभास को स्पष्ट करता है। (४३)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद प्राथमिकताओं की ग़लतफ़हमी को उजागर करते हुए हम से यह पहचानने का आग्रह करते हैं कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है और क्या हमें भटकाता है। वह मानवीय प्रयासों के विरोधाभास की ओर संकेत करते हैं, हम अक्सर क्षणभंगुर इच्छाओं का बोझ ढोते हैं और ऐसे संसाधन जमा करते हैं जो अंततः राख में मिल जाते हैं। यह हमें आत्म-चिंतन के लिए प्रेरित करता है, क्या हम सिर्फ़ इच्छा की आग को हवा दे रहे हैं या हम सच्ची संतुष्टि चाहते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com